अज्ञातकर्तृक ऋषिमण्डलस्तव: ।।

– सं. विजयशीलचन्द्रसूरि

'ऋषिमण्डल'ना नामे बे रचनाओ जैनोमां जाणीती छे. एक, ऋषिमण्डल-स्तोत्र : एनी ६३ अने १०० श्लोकोप्रमाण बे वाचनाओ प्रचलित छे, जेना कर्ता श्रीगौतमस्वामी होवानुं मनाय छे. आ स्तोत्र एक मन्त्रादिगर्भित प्रभावशाली स्तोत्र तरीके व्यापक रीते प्रख्यात छे. बे, ऋषिमण्डलस्तव प्रकरण : २१० गाथा-प्रमाण आ रचनाना कर्ता श्रीधर्मघोषसूरि छे; तेना पर रचायेली अनेक टीकाओ पैकी बेएक टीकाओ प्रकाशित पण छे. आमां प्राचीन महापुरुषोनां नामो तथा तेमना खास प्रसङ्गोनो निर्देश अने ते रीते तेमनी स्तवना थयेल छे. ते 'महर्षिकुलक' एवा नामे पण ओळखाय छे.

ए बेथी जुदी एवी त्रीजी रचना 'ऋषिमण्डल स्तव' अत्रे प्रगट थई रही छे. आ रचना २७१ प्राकृत गाथाओ-प्रमाण छे. तेमां विविध मुनिमहात्माओनी तथा तेमना विशिष्ट प्रसङ्गोनी गुणगाथा के स्तवना करवामां आवी छे. आ मुनिओ ते ऋषिओ, तेमना मण्डल एटले के समूहनी स्तुति ते 'ऋषिमण्डलस्तव'.

आना कर्तानो स्पष्ट उल्लेख जडतो नथी. जोके बीजी गाथामां "**इसीसु इसिवालिणा निच्चं**" आवो उल्लेख थयो छे, तेमां '**इसिवालिणा**' एटले '**ऋषिपालेन**' एवो अर्थ स्वीकारीए तो, ते उल्लेख कर्ताना नामनो सूचक थई शके खरो. परन्तु तेम अर्थ करवो के केम ते विषे नि:शङ्कता नथी; केमके अन्य कोई प्रमाण के आधार उपलब्ध नथी. परन्तु आ रचना घणी प्राचीन छे तेवुं तो भाषा तथा तेमांनां वर्णनो उपरथी अवश्य जणाई आवे छे. आ 'ऋषिमण्डल' – वर्णनमां छेल्लुं नाम **वज्रस्वामी** किंवा **आर्यवज्र**नुं मळे छे; त्यार पछीना कोई 'ऋषि'नुं नाम के वर्णन नथी थयुं; एटले आ रचना, कदाच आर्य वज्रना (वीर नि.नो पांचमो सैको, ईस्वी सननो प्रारम्भकाल) नजीकना समयमां थयेला कोई कर्तानी रचना होय तो ते सम्भवित लागे छे.

आ रचनानी ताडपत्रीय बे वाचना, बे अलगअलग ताडपत्र-प्रतिओमां सचवाई छे; ते बन्ने प्रतिओ खम्भातना शान्तिनाथ ताडपत्र भण्डारमां छे. आ

सिवाय अन्यत्र क्यांय तेनी प्रति छे नहि, अथवा नोंधाई नथी. खम्भातनी बे पैकी एक प्रतिनो क्र० १२० छे; तेमां विविध लघु कृतिओनो संग्रह थयो छे; ते पैकी सातमा क्रमाङ्के आ रचना, पृ. ९७-११९ मां आलेखायेली छे. आमां प्रायः एक पत्र अप्राप्त छे. आ पोथीनो ले. सं. श्रीपुण्यविजयजीए, १२मी सदीनो उत्तरार्ध अनुमान्यो छे. अत्रे आपेली वाचना मुख्यत्वे आ प्रतने अनुसरीने छे. तेने अहीं खं. १ एवी संज्ञाथी ओळखावी छे. बीजी प्रतिनो क्रम. १३१ छे. ते २८ पानांनी प्रत छे. तेनो ले. सं. १४ शतकनो पूर्वार्ध होवानुं पुण्यविजयजीए नोंध्युं छे. अत्रे तेने खं. २ एवी संज्ञा आपेल छे. बन्ने प्रतिओना पाठोनी तुलना करता केटलाक रसप्रद तफावतो तथा मुद्दा प्राप्त थाय तेम छे.

बीजी गाथामां '**इसीसु सुकयत्थयं**' एवो प्रयोग थयो छे. अर्थात् '**ऋषिषु सुकृतस्तवं**' एम सप्तमी-प्रयोग छे. प्रस्तावनानी गाथाओ ३-११ मां, कर्ता, स्तवना विषयभूत ऋषिओनां नामोनी यादी आपे छे, तेमां पण सर्वत्र सप्तमीनो ज प्रयोग कर्यो छे. आ महत्त्वनो प्रयोग छे. षष्ठीना स्थाने के षष्ठीना अर्थमां सप्तमीनो आवो प्रयोग, आ रचनाने आर्ष रचनामां मूकी आपे छे, एम कही शकाय.

स्तवनीय ऋषिओनो नाम-क्रम आ प्रमाणे छे : १. प्रभुवीर, २. इन्द्रभूति गौतम, ३. धन्य, ४. आर्यलोह, ५. अतिमुक्त, ६. सुनक्षत्र, ७. सुमणभद्द (स्वप्नभद्र), ८. शालिभद्र, ९. सुप्रतिष्ठ, १०. सुदर्शन, ११. दशार्णभद्र, १२. सनत्कुमार, १३. उदायन, १४. यदु-सारण, १५. बलराम, १६. शेलकपुत्र, १७. बाहुबलि, १८. स्कन्द, १९. विष्णु, २०. सुव्रत, २१. शिव, २२. केशी, २३. वज्ज लाढपुत्र, २४. तेतलिपुत्र, २५. वारत्त, २६. कूर्मापुत्र, २७. वैश्यायन, २८. निन्नकुलपुत्र, २९. देवकीपुत्र गज (सुकुमाल), ३०. प्रद्युम्न, ३१. शाम्ब, ३२. कालासवेसिय, ३३. हरिकेश, ३४. सुकोशल, ३५. लंचक निर्ग्रन्थ, ३६. मेयज्ज, ३७. अभय, ३८. जम्बू, ३९. ढंढ, ४०. गङ्गदत्त, ४१. नागदत्त, ४२. चिलातपुत्र, ४३. कुरुदत्त, ४४. आणंदऋषि, ४५. आर्यवज्र.

आ यादी प्रमाणे ज आम तो स्तवना चाले छे. परन्तु क्र. २१मां गोभद्रऋषि, क्र. २४मां वरदत्त ऋषि अने क्र. २७मां गोभद्र के गोसन्न ऋषिनी स्तवनानी गाथाओ मळे छे. आ नामो प्रस्ताविक नाम-क्रममां नथी ! अस्तु.

हवे गा. १२ थी शरु थती स्तवनाओ ऊपर दृष्टिपात करीए :

१. गा. १२-१८ मां भगवान महावीरनी स्तवना छे. १५मी गाथामां तेमने 'वीरभद्र' एवा नामे वर्णव्या छे, ते ध्यानार्ह छे. २. गा. १९-२३ मां गौतम गणधरनी स्तवना छे. तेमां तेमना जीवननी प्रमुख घटनाओनो निर्देश छे. ३. गा. २४-३०मां धन्ना-धन्य अणगारनुं वर्णन छे. तेमणे केवां-केटलां सुख-साधनोनो त्याग कर्यो छे अने तेमनो आहार केवोक हतो तेनुं बयान अचंबो जन्मावनारुं छे. ४. गा. ३१-३४मां लोहार्यनुं स्वरूप वर्णवतां कह्युं के 'लोहार्य अर्हन् (महावीर)नी वैयावच्च करता हता, अने तेमना पात्रमां आणेलो आहार भगवान पोताना करपात्रमां लई वापरता. सेंकडो श्रमणोमां लोहार्यने भगवान बोलावता. ५. गा. ३५-३८मां अइमुत्ता ऋषिनी स्तुति छे. आमां विशेष वात ए छे के, प्रचलित कथानक-अनुसार, बाल अतिमुक्तक रमी रह्या हता, त्यां गौतमस्वामीने आहारार्थे जतां जोया, ते रमवानुं छोडीने घेर लई गयो; पछी तेणे गौतम प्रभुनी शिष्यता स्वीकारी. आ कथाथी तद्दन जुदुं, आमां गा-३५-३६ प्रमाणे, अतिमुक्तकनी नजरे आहारार्थे जता तीर्थंकर चडी जाय छे; ते तेमने आहार-दान करे छे; अने पछीथी तेनां मावतर प्रभु वर्धमानने अतिमुक्तकनी शिष्यभिक्षा पण आपे छे; आवुं वर्णन छे. आवां मौलिक वर्णनो आ कृति प्राचीन होवानुं साबित करे छे.

६. गा. ३९-४० तथा ४३ आ त्रण गाथाओ सुनक्षत्र अणगारने स्तवे छे. तेमां गोशालाने शिखामण आपवा जतां तेमनो स्वर्गवास थयो तेवो उल्लेख छे. प्रचलित कथामां गोशालाने हाथे सुनक्षत्र अने सर्वानुभूति-एम बे मुनिना स्वर्गवासनी वात छे; अहीं ऋषिमण्डलना वर्णनमां सुनक्षत्रनी गणना छे, पण सर्वानुभूतिनी वात सुध्धां नथी, ते बहु महत्त्वनुं जणाय छे. बनवाजोग छे के एकज मुनि पर गोशालके प्रहार कर्यो होय, अने पाछळथी तेमां उमेरो करीने बे मुनिनी वात आलेखाई होय.

गा. ४१-४२मां धन्ना अणगारनी वात पुनः थई छे. प्रतिलेखकनी गरबडने कारणे ३० मी गाथा साथे आ बे गाथाओ होवी जोईए, तेना बदले अहीं आवी गई लागे छे. २४-३० गा. मां थयेल वर्णन अधूरुं लागे छे, जे आ बे गाथा उमेरातां पूर्ण बने छे.

७. गा. ४४-४६मां 'सुमणभद्र' (स्वप्नभद्र के सुमनोभद्र) ऋषिनुं वर्णन छे. आ मुनिनो वृत्तान्त प्रचलित नथी. कदाच, अहीं पहेलीवार तेमनी विगत मळे छे. तेमणे एक रात्रिमां १४ उपसर्गो खम्या, देहभावनो त्याग कर्यो, अने रात पूर्ण थतां तेमने केवलज्ञान प्राप्त थयुं. त्यार पछी इन्द्रे तेमनी वन्दना अने प्रशंसा करी.

८. गा. ४७-५५मां शालिभद्र ऋषिनुं रोचक वर्णन छे. गा. ४७मां शालिभद्रने 'नालंदासुकुमाल' तरीके ओळखावेल छे, तेथी तेओ राजगृहीनगरीमां नालन्दापाडामां वसता हशे तेम समजाय छे. प्रचलित कथा प्रमाणे शालिभद्रने ३२ पत्नीओ हती. अहीं तेने बदले २१ पत्नीओ होवानुं (गा. ४९) जणाव्युं छे, अने बत्रीसबद्ध नाटकोनी संख्या पण २१ ज जणावी छे. गा. ५२मां तेमनी पासे बे प्रकारनुं धन हतुं तेम वर्णवायुं छे : एक, वडीलोपार्जित, बे, नागदेवता द्वारा प्राप्त. आ उपरथी एम जणाय छे के शालिभद्रना पिता गोभद्रशेठ नागदेवलोकमां हशे. गा. ५३मां चोवीश भद्रोनो त्याग करीने दीक्षा लीधी तेम निर्देश छे. आ २४ भद्र शुं हशे ? ते समजमां आव्युं नथी.

९. गा. ५६-५८ सुप्रतिष्ठ ऋषिने वर्णवे छे. वर्णन अनुसार, 'सिंहनिष्क्रीडित' नामना महातपना आराधक ते छेल्ला हता. १०. ५९ थी ६३ गाथाओमां सुदर्शन ऋषिनी स्तुति थई छे. दधिवाहन राजानी अभया राणी द्वारा थयेल उपद्रवथी पण ते चलित न थया, अने तेमनुं गळुं कापवा माटे उगामेली तलवार पुष्पगुच्छरूपे पलटाई तेवो उल्लेख ध्यानार्ह छे. ११. गा. ६४-६५मां राजा दशार्णभद्र तथा तेमणे करेला त्यागनुं वर्णन छे. ७०० स्त्रीओ अने ५० हजार रथ इत्यादिनो त्याग करीने तेमणे दीक्षा लीधी हती. १२. गा. ६६-७४ चक्रवर्ती सनत्कुमारनी स्तवना करे छे. तेमां तेमने थयेल सात मोटा रोगोनां नामो पण छे.

१३. गा. ७५-८२ मां उदायण राजर्षिनुं वर्णन छे. उदायन (के उद्रायण ?) सत्यनिष्ठ हतो, अने ते ज कारणे तेनी सैन्य-छावणीने विकट जंगलमां पाणीनी अछत थई, त्यारे दिव्य सहायथी पाणी सांपडेलुं एवो अहीं (गा. ७५) उल्लेख छे. चण्डप्रद्योतना कपाळे तेणे 'मम दासीपतिः' एवा अक्षरो अंकावेला ते 'मोरपित्त' (मोरनुं पित्त अथवा ते नामनुं कोई विलक्षण द्रव्य)

वडे अंकावेला एवो उल्लेख पण महत्त्वनो छे (गा. ७६). पित्त पीळुं होय, तेथी कपाळे तेनाथी थयेल अंकन सोनानो भास करावतुं होय तो बनवाजोग छे. सौवीर देशना ए राजाए एक हजार गामोनुं साम्राज्य तजी दीक्षा लीधी; ते अन्तिम राजर्षि गणाया; तेमना मरणथी रोषे भरायेला देवोए शिलानी घोर वृष्टि करी हती (अने ते देशने उज्जड कर्यो हतो); अने तेओ उत्कृष्ट तपस्वी हता; आवी वातो आमां नोंधाई छे.

१४. गा. ८३-८५मां सारण ऋषिनुं वर्णन छे. ते मुनि नेमिनाथना वारामां थया हशे तेवुं 'उज्जयन्तशैल'ना उल्लेखने लीधे (गा. ८३) मानी शकाय. १०० वर्षनो संयम, तेमां छट्ठ-अट्ठमना तप, ए जोतां ते महातपस्वी हता तेम समजी शकाय छे. १५. गा. ८६-९२मां कृष्णना भाई बलदेव मुनिनी स्तुति छे. तेमनी तपस्यानुं वर्णन : सातमी (प्रतिमा) सातवार, आठमी ८वार नवमी ९ वार, १०मी १० वार; तो ६० मासखमण, ६० पासखमण, ४ चारमासी उपवास ! तेमनी रक्षा माटे देव सिंहनुं रूप लई जंगलमां साथे फरतो ! १६-१७. गा. ९३-९४मां सेलगपुत्त-शिवनी, अने गा. ९५-१०१मां बाहुबलि मुनिनी स्तवना छे.

१८. गा. १०३-११३ मां स्कन्दकुमार मुनिनी स्तुति थई छे. तेमनी साधनाना वर्णन दरमियान, 'रोहीडग' (रोहीडा) नगरनुं नाम आवे छे. त्यां तेमने कोई क्षत्रिये 'शक्ति' वडे प्रहार करेलो, ते आजे मारवाडमां छे ते ज रोहीडा हशे ? तो ते क्षेत्र घणुं पुरातन छे तेम मानवुं पडे. ते मारनारने तेमणे जीवतदान अपाव्युं (गा. ११०) तेनी पण नोंध छे; तो पोताना, क्षत्रियवध करनारा पिताने प्रतिबोध आप्यानी वात पण नोंधेल छे (गा. १११).

१९. गा. ११४-१२३ विष्णु(कुमार) मुनिनो वृत्तान्त वर्णवे छे. १६मा शान्तिनाथ जिनना वखतमां ते थया. (गा. ११४). ६० सहस्र वर्षो छट्ठतप तप्या. महापद्म नामे माण्डलिक राजा पासे, साधु-संघ खातर, ३ पगलां जग्या मागी (११६). ३ पगलांमां ३ लोक आवरी लीधा. छेवटे प्रायश्चित्त करीने सर्वार्थसिद्धे देवगति पाम्या. २०-२१. १२५-२७ गा. मां सुव्रतमुनिनी वात छे; तो १२८-२९मां गोभद्र ऋषिनुं वृत्तान्त छे. आ मुनिने कुबेर यक्षराज द्वारा धर्मबोध मळेला, आ नाम पण प्रचलित नथी. २३. गा. १३०मां शिव ऋषिनी वात एक ज

गाथामां छे.

२३. गा. १३१-३३मां केशीकुमार श्रमणनी वात छे. तेमां गा. १३१ नो भाव स्पष्ट थतो नथी. २४. गा. १३४मां वज्र लाढपुत्रनुं; २५. गा. १३५मां वरदत्तऋषिनी; २६. गा. १३६-३७मां तेतलिपुत्रनी वात आवे छे. २७. १३८-१४२मां वारत्तऋषिनुं स्वरूप वर्णव्युं छे. ते मुनि पार्श्वनाथ जिनना शिष्य छे तेवुं गा. १४२मां छे. २७. १४३-४७ मां कूर्मापुत्रनी वात छे. ते गृह-स्थ केवलज्ञानी छे; अने ते केवली होवानी जाण, महाविदेहना जिन थकी विद्याधर मुनि जाणी लाव्या त्यारे ज थई छे (गा. १४५). २८. गा. १४८मां 'गोसन्न' नामे कोई ऋषिनी वात थई लागे छे. आ गाथामां शुं तात्पर्य छे ते स्पष्ट थतुं नथी.

२९. गा. १४९-५१मां वैश्यायन ऋषिनी वात छे. गोशालाए तेमने स्खलना पहोंचाडतां ते रोषे भराया; तेज (तेजोलेश्या) छोड्युं; परन्तु तेनी समीपमां ज वीरप्रभु होवानुं ध्यानमां आवतां ज तेमणे ते पाछुं खेंची लीधुं; एवी वात आमां छे, जे अद्भुत छे. प्रसिद्ध कथा एवी छे के वैश्यायने तेजोलेश्या मूकी, तेनाथी गोशालाने बचाववा माटे प्रभु वीरे शीतलेश्या छोडी हती. लागे छे के आ 'स्तव'गत वृत्तान्त वधु तथ्यपूर्ण छे; प्रसिद्ध कथा ते पाछळथी थयेल फेरफाररूप हशे.

३०. गा. १५२-१६० मां 'निन्न' कुलपुत्र मुनि विषे वर्णन छे. बे 'कुलल' (पक्षी के प्राणी-विशेष)ने एक मांस-खण्ड खातर लडतां जोईने तेमने वैराग्य थयो हतो. तेमना निर्वाण पछी चमरेन्द्रे तेमना शरीरने बे बाजुथी रुंध्युं (अर्थात् अन्तिमविधि करतां मोहवश के रागवश रोकतो हतो), तेमज तेणे तेमनी स्तुति करी (गा. १५९-६०). आ नाम-वर्णन पण अप्रसिद्ध लागे छे. ३१. गा. १६१-६९ मां गजसुकुमाल मुनिनुं बयान छे. गज (हाथी)नी सुंढ जेवी भुजाओ, गज जेवी चाल, गजना मद जेवी देह-गन्ध, तेथी नाम पड्युं गजसुकुमाल (गा. १६६). तेना माता-पिताए नेमिनाथ प्रभुने शिष्य तरीके ते अर्पण कर्यो हतो (गा. १६२). तेमना यौवन पाछळ राजकन्या चन्द्रलेखा पागल बनी हती (गा. १६५). (ते परण्या होय तेवुं जणातुं नथी). गजसुकुमालने तेमना ससराए स्मशानमां उपसर्ग करेलो एवी प्रचलित कथानो अहीं गन्ध पण

मळतो नथी, ते ध्यानमां लेवा योग्य छे.

३२. गा. १७०-७८मां प्रद्युम्न ऋषिनी स्तवना छे. वर्णन मजानुं छे. एक नवी वात ए छे के राजकुमार प्रद्युम्न विमानमां बेसीने फूल वरसावतो नेमिनाथ पासे आवे छे. (गा. १७६). ३३. गा. १७९-८६ शाम्बकुमार मुनिनुं स्तवन करे छे. आ रचनामां एक प्रयोग ध्यान आपवा जेवो छे : 'बारवई कायलयं' (गा. १७९). अर्थात् द्वारावतीमां जेनी काया निर्माई छे – द्वारावतीना वासी. एकथी वधु स्थाने आवो प्रयोग थयेल छे. धगधगती शिला उपर एमणे अणसण ग्रहेलुं, अने आखा देह पर थयेल फोडलाओमांथी रुधिर झरतुं होवा छतां ते विचलित नहोता थया, एवुं गा. १८३-८४नुं वर्णन स्तब्ध करे तेवुं छे.

३४. गा. १८७-९१मां कालाश्रितवेशिक मुनिनुं स्वरूप बताव्युं छे. 'मोगल्ल' (मोकल)[१] पर्वत-शिखर पर तेमणे अनशन कर्युं त्यारे शियाळणीए तेमना शरीरने फाडी खाधुं हतुं, तोय ते चळ्या न हता (गा. १९१). ३५. गा. १९२-९६ हरिकेश मुनिने वर्णवे छे. शूद्र कुलमां पेदा थवा छतां तेमणे दीक्षा लीधेली. काळोतरो झेरी सर्प तेमना वैराग्यनुं कारण बनेलो (गा. १९४). कोशलदेशनी राजकन्या परणवा आवी तो तेनो अस्वीकार ज कर्यो. एक सहस्र तेमनी सेवामां रहेता हता.

३५. गा. १९७-२०२मां सुकोशल मुनिनी स्तुति थई छे. यौवनवयमां ज श्रेष्ठ स्त्रीनो त्याग करीने दीक्षा लीधी. यावज्जीव छट्ठ (२ उपवास)नुं तप कर्युं. गत जन्मनी माता मरीने वाघण थयेली अने तेणे पोतानां बच्चां माटे, पोताना जन्मान्तरना आ पुत्र (सुकोशल) ने फाडी खाधो ! मरीने ते सर्वार्थसिद्धे देव थया. ३६. गा. २०३-९मां लंचक ऋषिनुं वर्णन छे. आ नाम पण अल्प प्रसिद्ध छे. ते विशालानगरीनी श्रेष्ठ व्यक्ति हता. गा. २०५मां थयेल वर्णन अनुसार, 'स्तव'ना कर्ता आंखे देखाती वात वर्णवतां होय तेम जणाय छे. तेमणे नोंध्युं छे के आजे पण विशालामां, ज्यां लंचक मुनि प्रतिमाध्याने ऊभेला त्यां, तेमना नामे, **'लंचगसिवोवगास'** (कोई स्थानविशेष के कोई मार्ग के चोक जेवुं) छे. आ नोंध बहु महत्त्वनी छे. एनाथी जेम लंचग ऋषिनो इतिहास पुरवार

१. राजस्थानमां मोकलसर क्षेत्र छे. त्यां 'मोकल'-पहाडी छे, ते आ हशे ?

थाय छे, तेम आ 'स्तव'ना कर्ता पण केटला प्राचीन हशे ते पण अनुमानी शकाय छे.

३७. गा. २१०-२१८ मेयज्ज (मेतार्य के मैत्रेय) ऋषिनुं गुणगान करे छे. तेमनो विख्यात जीवन प्रसङ्ग आमां वर्णवायो छे : सोनीने त्यां आहारार्थे गमन; क्रौंच पंखी द्वारा सुवर्णयव चणी जवा; सोनीनी पृच्छाना जवाबमां मुनिनुं मौन, क्रौंचनुं नाम न आपवुं; सोनी द्वारा मुनिना मस्तके एवुं कठोर बन्धन के जेथी तेमनी बे आंखो फूटी गई, तो पण अचल अवस्था अने आत्मध्यानमां लीन; छेवटे त्यां ज केवलज्ञान पामीने निर्वाणपद पाम्या. ३८. गा. २१९-२२३ अभयकुमारनुं वर्णन आपे छे. गर्भमां हता त्यारे ज तेमनी माताने सहु जीवोने अभयदान आपवानो मनोरथ थयो हतो, ते पाळ्यो पण हतो; तेथी ज तेमनुं नाम 'अभय' पाडवामां आव्युं. पदानुसारी लब्धिना ते स्वामी हता. (एक पद बोलो,तो ते आखुं सूत्र, आखो पाठ, आखो ग्रन्थ बोली जाय तेवी शक्ति). तेमणे वर्धमानस्वामी पासे दीक्षा ग्रहण करी हती. अहीं गा. २२१मां 'सेणियकुलकायलयं' एवो प्रयोग थयो छे : श्रेणिकना कुलनी जेनी काय-लता छे ते, एम अर्थ बेसे.

३९. गा. २२४-३१मां जम्बूकुमार मुनिनी स्तवना थई छे. प्रभव आदि चोरोनो प्रसङ्ग, ८ कन्या साथे लग्न अने एकज रातमां तेमनो त्याग, ते सर्व सहित दीक्षा-आ बधुं आमां वर्णन थयुं छे. ४०. गा. २३२-३६मां ढंढ अणगार (प्रसिद्ध नाम 'ढंढण')नुं वर्णन छे. ४१. गा. २३७-४१मां गङ्गदत्त मुनिनुं वर्णन थयुं छे. तेमणे केटली समृद्धिनो त्याग कर्यो, तेनी वात आमां थई छे. ४२. गा. २४२-४६ मां नागदत्तनी वात छे. तेना पिता मरीने नागलोकमां उत्पन्न थया होई, अने तेमने आ पुत्र पर विशेष स्नेह होई, तेओ नागकन्याओ साथे तेने परणावे छे. कालान्तरे ते कन्याओने पण त्यजीने ते दीक्षा ले छे.

४३. गा. २४७-५५मां चिलातपुत्र मुनिनुं स्तवन थयेल छे, त्रण पदो सांभळीने धर्म अने समाधिने वर्या. देहभाव तजी दीधो. बे आंखो खेंची काढवामां आवी छतां विचलित न थया. आंखोथी वहेतां लोहीनी गन्धथी आवेली कीडीओए आखा देहने फोली खावा छतां ते चळ्या नहि. ४ लोकपालो पण तेमने प्रणाम करी गया. अढी रात्रि-दिवसमां ज तेओ पार

पामीने देव थया हता. ४४. गा. २५६-५९ कुरुदत्त ऋषिने वर्णवे छे. ते दीक्षा लई स्मशानमां ध्यान धरता ऊभेला, त्यारे चिताना अग्नि वडे बळी जवा छतां विचलित न थया. अहीं पण 'हत्थिणपुरकायलयं' (२५८) प्रयोग थयो छे. ४५. गा. २६०-६४मां आनन्द ऋषिनी वात थई छे. आ मुनि महावीरस्वामीना समयना छे. तेनी सम्पत्ति एटली बधी हती, के राणी चेल्लणा अने राजा श्रेणिकना मान्यामां न आववाथी तेओ जाते तेमना घरे तेमनी सम्पत्ति जोवा गयेला ! (गा. २६२). तेमनी साथे तेमनां पत्नीए पण दीक्षा लीधी हती.

४६. गा. २६५-७०मां वज्रस्वामीनुं गुणवर्णन थयुं छे. तेमणे आकाश-गामिनी विद्यानो उद्धार कर्यो. ते अन्तिम श्रुतधर हता. ते आकाशमार्गे (संघने) माहेश्वरी नगरीथी शेषानगरीए लई गया हता. बाल-अवस्थामां, देवो (यक्षो) द्वारा अपाता आहारनो तेमणे निषेध करेलो, सुविहित १७०० साधुओ साथे तेमणे अनशन कर्युं हतुं. गा. २७०मां जणाव्या प्रमाणे तो ते सर्वार्थसिद्ध विमाने गया हता. अथवा तो सर्वार्थनी सिद्धिना ते स्वामी बन्या हता, एम पण अर्थ करी शकाय.

गा. २७१मी थोडीक अशुद्धिवाळी जणाय छे. तेमां कर्ता द्वारा उपसंहार थयो छे. कर्ताए पोतानुं नाम लखवानो आग्रह दर्शाव्यो नथी.

बन्ने ताडपत्र प्रतिओना फोटा लेवडावी देवा बदल खम्भात श्रीशान्तिनाथ ताडपत्र भण्डारना कार्यवाहकोनो आभारी छुं.

आ रचनानो ख्याल नहोतो. डॉ. ढांकीसाहेबे एक प्रसंगे सूचव्युं के तमे आ एक प्राचीन रचना हजी अप्रगट छे ते जुओ अने नकल ऊतारीने प्रसिद्ध करो. खम्भातना सूचिपत्रमां पुण्यविजयजी महाराजे तेना विषे नोंध आपी छे. आथी आ रचना माटे जिज्ञासा जागी, जेनुं परिणाम अत्रे प्रस्तुत छे. आवी अद्भुत कृति प्रत्ये ध्यान दोरवा बदल डॉ. मधुसूदन ढांकीनो पण आभारी छुं.

आ कृतिनी हस्तप्रत क्यांक होय अने कोईना ध्यानमां आवे तो ते तरफ ध्यान दोरे अथवा तेनी नकल प्राप्त करावी आपे तेवी विज्ञप्ति.

श्रीऋषिमण्डलस्तवः ॥

इसिमंडलस्स गुणमंडलस्स तवनियममंडलधरस्स ।
संसारमंडलविहाडयस्स[१] थयमुत्तमं वोच्छं ॥१॥
जिणवरसासणनिउणा जिणवरवयणाणुरत्तभावेणं ।
सुणह सुकयत्थयमिणं[२] इसीसु इसिपालिणा[३] निच्चं ॥२॥
भयवंतम्मि[४] य वीरे गोयमगोत्ते य इंदभूयिम्मि[५] ।
धन्ने धम्मविहन्ने[६] जियलोहे[७] अज्जलोहे[८] य ॥३॥
अइमुत्ते य तिगुत्ते धीर[९] धणुम्मि य तहा सुनक्खत्ते ।
सिद्धे य [१०]समणभद्दम्मि सालि[११]भद्दे य सुपईट्ठे[१२] ॥४॥
धीरे सुदंसणम्मि य दसन्नभद्दे सणंकुमारे य ।
रायरिसिम्मि य उद्दायणम्मि जउ सारणे य कयं ॥५॥
नीलगवसणे रामे लंचग[१३]पुत्ते य बाहुबलि खंदे ।
विण्हुम्मि[१४] सुव्वियम्मि[१५] य सिवे य सिद्धम्मि[१६] बुद्धम्मि ॥६॥
केसिम्मि जियकिलेसे अणवज्जे वज्ज लाढपुत्ते य ।
तेयलिपुत्ते य [१७]कयं मुणिम्मि वारत्तए चेव ॥७॥
कुम्मगपुत्ते तह वेसियायणे तह य निन्नकुलपुत्ते ।
देवइपुत्ते य गए दोसु वि[१८] पज्जुन्न-संबेसु ॥८॥
कालासवेसियम्मि य हरिएसे[१९] तह सुकोसले कुसले ।
निग्गंथलंचगम्मि च अज्जे मेयज्जनामे य ॥९॥
अभयम्मि य अभयकरे जंबुम्मि य जम्ममरणनिम्मुक्के[२०] ।
ढंढम्मि गंगदत्ते नागदत्ते य अणगारे ॥१०॥

---

१. ०**विग्घा**० खं. २ । २. **सुकयत्थमिणं** खं. २ । ३. ०**पालणा** खं. २ । ४. **भग**० खं. २ । ५. ०**भूयम्मि** खं. २ । ६. ०**विहिन्ने** खं. २ । ७.८. ०**लोभे** खं. २ । ९. **धीए य धणम्मि तह सु**० खं. २ । १०. **सुमण**० खं. २ । ११. **सालभद्दम्मि** खं. २ । १२. **सुपयट्ठे** खं. २ । १३. **सेलग**० खं. २ । १४. **विन्हु**० खं. २ । १५. **सुव्व**० खं. २ । १६. **सुद्ध**० खं. २ । १७. **तहा** खं. २ । १८. **य** खं. २ । १९. **हरिएसुम्मि य सु**० खं. २ । २०. ०**नीहूए** खं. २ ।

सूरे चिलायपुत्ते अणुं[१]त्तरपरक्कमे य कुरुदत्ते ।
आणंदे य रिसिम्मिय वइरे य महाणुभावम्मि ॥११॥
आइगरं तित्थयरं अप्पडिहयनाणदंसणचरित्तं ।
धम्मवरचक्कवट्टिं वंदामि जिणं महावीरं ॥१२॥
जच्चसुवन्नगवन्नं कोमुइपडिपुन्नचंदसरिसमुहं ।
कमलदलसरिसनयणं सुरदुंदुहितुल्लनिग्घोसं ॥१३॥
मत्तवरवारणगई(इं) अचलं मेरुमिव सुरमिव सुरूवं ।
रिसिसयसहस्समहियं परमरिसिं वंदिमो वीरं ॥१४॥
जेणेगराइयाए वीसं अहियासिया उवसग्गा ।
तं वीरभद्दमणहं विबुहगणनमंसियं वंदे ॥१५॥
जो सो तित्थयराणं अपच्छिमो भारहम्मि वासम्मि ।
पुरिसव[२]रमउलविरियं वंदामि जिणं महावीरं ॥१६॥
पव्वाविया य[३] पढममेव गोयमा[४] तिन्नि भाउया[५] जेण ।
ति[६]ण्हं पि य परिवारो पन्नरससयाइं पुन्नाइं ॥१७॥
अवसेसा वि[७] गणहरा अट्ठ कमेण[८] तवसंजमे ट्ठविया ।
सव्वट्ठनिट्ठियट्ठं वंदामि जिणं महावीरं ॥१८॥
वेयपयाण य अत्थे कहिए वीरेण [९]जो विगयमोहो ।
पव्वइयं तं धीरं सिरसा हं गोयमं वंदे ॥१९॥
जेण तया कोडिन्ना आणीया तावसा विगयमोहा ।
पव्वाविया य समणा भिक्खेण य विम्हयं नीया ॥२०॥
जो चरइ तवमुयारं उदा[१०]रकित्तिस्स पायमूलम्मि ।
नायसुयस्स अरहओ तं सिरसा गोयमं वंदे ॥२१॥
जो सो सयाणुरत्तो जिण[११]वीरं केवलिं अमिय[१२]नाणी ।
अइरागबंधणेणं जस्स न उप्पज्जए नाणं ॥२२॥

---

१. **अणंतर०** खं. २ । २. **पुरिसगण०** खं.२ । ३. **०विया पढमेव** सं. २ । ४. **भावया** खं. २ । ५. **गोयमा चेव** खं. २ । ६. **तिन्हं** खं. २ । ७. **य** खं. २ । ८. **कम्मेण** खं. २ । ९. **विगयमोहेणं** खं. २ । १०. **उयार०** खं. २ । ११. **मुणिवसहं** खं. २ । १२. **महावीरं** खं. २ ।

नायसुए सिद्धिगए वोच्छिन्नं पेम[१]बंधणं जस्स ।
उ[२]प्पन्नं च अणंतं नाणं तं गोयमं वंदे ॥२३॥

दोमासिय ते[३]मासिय चाउम्मासिय तहेव छम्मासे ।
तवसा मुणिमुक्कट्ठं धन्नं वंदामि अणगारं ॥२४॥

फासुयमवि जो लुक्खं भुंजइ तंपि य न[४] भुंजई पकामं ।
धन्नं[५]रिसिवरमहियं परमट्ठगवेसयं वंदे ॥२५॥

उत्तत्तकणयवन्ना महिला मणिहारभूसियंगीओ ।
धन्नो परिच्च[६]इत्ता ओमोय[७]रियाए जावेइ ॥२६॥

जस्स य संलीणत्तं खंती मद्दवय उत्त[८]मा तुट्ठी ।
गुणसागरं अपारं धन्नं वंदामि अणगारं ॥२७॥

जो सयणपरियणजणं धणकोडिं उज्झिऊण पव्वइओ ।
विहरइ तवतणु[९]यंगो धन्नं वंदामि अणगारं ॥२८॥

जस्स कओ आहारो नं[१०]सइ तत्ते जहा कडाहम्मि ।
छूढो उय[११]रंकभल्ले धन्नं वंदामि अणगारं ॥२९॥

सच्च[१२]ुप्परि देवाणं न[१३]वहि उ मासेहिं मग्गिया वसही ।
एक्का य गब्भवसही सेसा धन्नस्स धन्नस्स ॥३०॥

जो अरहओ भगवओ वेयावच्चं महायसो कासी ।
[१४]छन्दोणुयत्तिमणहं सि[१५]रसा लोहं नमंसामि ॥३१॥

धन्नो सो लोहज्जो खण्डतखमो पवरलोहसरिवन्नो ।
जस्स जिणो पत्ताओ इच्छइ पाणीहिं भोत्तुं जे ॥३२॥

---

१. **राग०** खं. २ । २. **नाणं से उप्पन्नं तं सिरसा गो०** खं. २ । ३. **०तिय-चाउमासिएहिं छम्मासिएहिं खमणेहिं** खं.२ । ४. **णु** सं. २ । ५. **धन्नरिसिं वर०** खं. २ । ६. **परिचत्ताओ** खं. २ । ७. **गोयरिया व -----०** खं. २ । ८. **मुत्तगा** खं. २ । ९. **तणुअंगो** खं. २ । १०. **जस्स हु** खं. २ । ११. **उदरकवल्ले** खं. २ । १२. **सव्वुपरि** खं. २ । १३. **[न]वहि य** खं. २ । १४. **छन्दमणुयत्तमाणं** खं. २ । १५. **लोहज्जमिसिं** खं. २ ।

समणसयाणं मज्झे वागरिउं पुन्नचंदवयणेण ।
तित्थयरेणं लोहो अरहइ धीईए[१] अप्फुन्ने[२] ॥३३॥
जो कम्मसेलवल्लिं अट्ठविहं छिंदिउं निरवसेसं ।
सिद्धिवसहिमुवगओ तमहं [३]लोहं नमंसामि ॥३४॥
जो खुड्डुलओ संतो कीलंतो पासिऊण तित्थयरं ।
वंदिय पडिला[४]भेई अइमु[५]त्तरिसिं नमंसामि ॥३५॥
जं तं अम्मापियरो जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
दासी य सीसभि[६]क्खं अइमुत्तरिसिं नमंसामि ॥३६॥
छ[७]व्वरिसो पव्वइओ □ [८]निग्गंथो रोइऊण पावयणं ।
[९]सिट्ठं विहुयरयमलं □ अइमुत्तरिसिं नमंसामि ॥३७॥
डहरं अडहरबुद्धिं □ [१०]मोक्खविहिविसारयं पिउणो ।
[११]धीरं कुमारसमणं □ अइमुत्तरिसिं[१२] नमंसामि ॥३८॥
जो धम्मं सोऊणं जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
□ [१३]पव्वइओ अणगारं तमहं वंदे सुनक्खत्तं ॥३९॥
सोलस धणकोडीओ सोलस भज्जाइं परिच्चइ[त्ता]य ।
पव्वइओ अणगारो तमहं वंदे□ सुनक्ख[१४]त्तं ॥४०॥
कायंदीए भद्दीतणयं जियसत्तुदिक्खकयमहिमं ।
धीरं [१५]धणमणगारं वीरजिणपसंसियं वंदे ॥४१॥
[१६]दुद्धंतरि उज्झिय अंबिलेण लेवेण झोसियसरीरं ।
नव[१७]मासा परियायं सव्वट्ठगयं धणं वंदे ॥४२॥

---

१. **पीइए** खं. २ । २. **अप्फुन्नो** खं. २ । ३. **वंदामि लोहज्जं** खं. २ । ४. **०लाहेई** खं. २ । ५. **अइमत्त०** खं. २ । ६. **सिक्खं** खं. २ । ७. **जहारिसो** खं. २ । ८-९. □ **मध्यगतः पाठो न** खं. २ । १०-११. □ **मध्यगतं न** खं. २ । १२. **०रिसी** खं. १ । १३. □ **मध्यगतं** खं. २ न । १४. **सुनक्खत्ते** खं. २ । १५. **धण्णणगारं** खं. २ । १६. **लद्धतरि०** खं. २ । १७. **नवमासी** खं. २ ।

गोसालं सासंतो कालगओ जो गओ अमरलोयं ।
सव्वुप्परिल्लकप्पं[1] तमहं वंदे सुनक्खत्तं[2] ॥४३॥
जेणेगराइयाए चोद्दस [3]अहियासिया उवस्सग्गा ।
वोसट्ठचत्तदेहं तमहं वंदे सुमणभद्दं[4] ॥४४॥
जस्सुट्ठियम्मि सूरे उप्पन्नं नाणदंसणमणंतं ।
[5]पडिमाए प(पा)रियाए तमहं वंदे सुमणभद्दं ॥४५॥
जं वंदिऊण इंदो काऊण पयाहिणं च भाणीय ।
'लाहा हु ते सुलद्धा जंसि [6]दढधिई मम वि लाभो' ॥४६॥
[7]नालंदासुकुमालं भोगविहिविसारयं पियं पिउणो[8] ।
तं सालिभद्दमणहं विमाणवरवासियं वंदे ॥४७॥
बत्तीस [9]वि बद्धाइ सिंगारा[10]गारचारुवेसाइं ।
जस्सेक्[11]कवीसइं नाड[12]याइं सुर[13]नाडयनिभाइं ॥४८॥
वरपाणभोयणविहिं[14] भज्जाउ एक्कवीसइं [15]चइया ।
जो धम्मरामरत्तो[16] तं वंदे सालिभद्दमिसिं ॥४९॥
हारा जेण य विकिण्णा॥ महावणं चंदणं अगरुयं च ।
गब्भप्पगयनिवाया[17]॥ तं वंदे सालिभद्दमिसिं ॥५०॥
जस्स घरे साहीणा छप्पि रिऊ निच्चकालरमणिज्जा ।
वावीओ य [18]अणोवमाणेगा[19] देव[20]प्पभावेणं ॥५१॥
पुव्वपुरिसागयं धणं अक्खयं नागदेवयादिन्नं ।
जो विहुणिय पव्वइओ तं वंदे सालिभद्दमिसिं ॥५२॥
भद्दाइं चउवीसं जो चइय अणोवमं तवं कासी ।
तं आगमेसिभद्दं गोभद्दसुयं नमंसामि ॥५३॥

---

१. **सव्वुवरिल्लकपेमे** खं. १ । २. **सुनक्खत्ते** खं. २ । ३. **सुहिया भिया** खं. २ । ४. **सुनक्खत्तं** खं. २ । ५. **पायं उक्खिव्वमाणस्स वंदेमो तं सु०** खं. २ । ६. **दढं धी ममहिलासो** खं. २ । ७. **नाणंगसु०** खं. २ । ८. **पिउणे** खं. २ । ९. **नि०** खं. २ । १०. **सिंगारंगाइ चारु०** खं. २ । ११. **जस्सेग०** खं. २ । १२. **नाडगाइं** खं. २ । १३. **सुरवहूयनि०** खं. २ । १४. **०विही** खं. २ । १५. **तइया** खं. २ । १६. **०रत्ते** खं. २ । १७. ॥ **एतदन्तर्गतं न** खं. २ । १८. **अणु०** खं. २ । १९. **अणोवम णाग०** (?) । २०. **तप्पहावेणं** खं. २ ।

जो निच्छयं उवगउ [1]कयंजलिं(ली) वंदिऊण लोयगुरुं ।
खामेऊण सुविहिए जावज्जीवं चयइ [2]भत्तं ॥५४॥
मासं पाओवगओ आलोइय निंदिऊण दुच्चरियं ।
सव्वट्ठसिद्धिनिलयं तं वंदे सालिभद्दमिसिं ॥५५॥
जो चइऊण विमाणे[3] सिलप्पवालमणिकंचणसमिद्धे[4] ।
वेसमणभवणसरिसे आयाओ इब्भभवणम्मि ॥५६॥
भोगेसु अरज्जंतो धम्मं सोऊण वद्धमाणस्स ।
जो समणो पव्वइओ सुपइट्ठमिसिं नमंसामि ॥५७॥
जो वागरिओ वीरेण सीहनिक्कीलिए तवोकम्मे ।
ओसप्पिणिए भरहे अपच्छिमो सि त्ति तं वंदे ॥५८॥
चंपाए जो तइया अहियासे दारुणे उवस्सग्गे ।
वोसट्ठचत्तदेहं सुदंसणमिसिं नमंसामि ॥५९॥
जो दहिवाहण[5]पीइल्लियाए अभयाए अग्गमहिसीए ।
खोभेऊण न चइओ सुदंसणमिसिं नमंसामि ॥६०॥
खण्डतखमं उग्गतवं वंदे तवतेयरूवसंपन्नं ।
किन्नरगणेहि महियं सुदंसणमिसिं नमंसामि ॥६१॥
जस्सासी पुप्फमओ परियत्ते दारुणे य उवसग्गे ।
सीसम्मि छिज्जमाणे सुदंसणमिसिं नमंसामि ॥६२॥
वरवेरुलिये[6] य मणिं मुत्ताओ कंचणं पवालं च ।
चइउं सुदंसणमिसिं(सी)नेव्वाणमणुत्तरं पत्तो ॥६३॥
नयरं च दसन्नपुरं सत्त य पमयासयाइं चइऊण ।
धणकणयरयणनिचए मुत्तापुंजे महंते य ॥६४॥
को[7]मारियाओ भज्जा पन्नासं कप्पिया[8] रहसहस्सा[9] ।
चइउं दसन्नभद्दो नेव्वाणमणुत्तरं पत्तो ॥६५॥

१. **पच्चलिओ** खं. २ । २. **भद्दं** खं. १ । ३. **विमाणं** खं. २ । ४. **०समिद्धं** खं. २ । ५. **०पिययमाए** खं. २ । ६. **०वेरुलियमणी०** खं. २ । ७. **कोमारी भज्जाओ** खं. २ । ८. **कप्पियं** खं. २ । ९. **०सहस्सं** खं. २ ।

जो चइय सागरंतं एगच्छत्तं महिं पुहइपालो ।
पव्वइंओ[१] तं धीरं सणंकुमारं नमंसामि ॥६६॥
जो वरिससयसहस्सं भुंजियभोगो[२] समुद्धुयमुइंगो ।
पव्वइओ[३] तं धीरं सणंकुमारं नमंसामि ॥६७॥
अट्ठसयलक्खणधरो चोसट्ठी[४] महिलियासहस्साइं ।
सव्वंगसुंदरीणं जणवयकुसुमाइं वोसिरिया[५] ॥६८॥
छड्डेऊणं[६] नरिंदो नव निहओ नव य आगरसहस्से ।
नवमेहसन्निहाणिं[७] अ दंतिसहस्साइं चुलसीई ॥६९॥
अट्ठारसेसुं[८] ट्ठाणेसु वंदिओ सहरिसेण सुरवइणा ।
सत्तहि वाहीहि जियं सणंकुमारं नमंसामि ॥७०॥
कंडू अभत्तसद्धा तिव्वा वियणा य अच्छि-कुच्छीसु[९] ।
[१०]कासं जरं च सासं अहियासे सत्त वाससए ॥७१॥
[११]जो वंदिओ महप्पा [१२]देविंदेण चमरेण य जमेण ।
दिव्वाए[१३] पुप्फवुट्ठीए अच्चिओ देवसंघेहिं ॥७२॥
जेण कयं सामन्नं वास[१४]सयसहस्समुग्गतेएणं ।
देविंदवंदमहियं सणंकुमारं नमंसामि ॥७३॥
कप्पे सणंकुमारे जस्स ट्ठिई सागरोवमा सत्त ।
तं आगमेसिभद्दं सणंकुमारं नमंसामि ॥७४॥
सच्चवयणेण सलिलं कंतारगयस्स जस्स खंधारे ।
दिव्वं पाउब्भूयं जिणसासणभत्तिराएण ॥७५॥
जेण तया पज्जोओ [१५]उव्वट्टेऊण समरमज्झम्मि ।
घेत्तुं बला निला[१६]डम्मि अंकिओ मोरपित्तेणं ॥७६॥
जो सो रायरिसीणं अपच्छिमो भारहम्मि वासम्मि ।
[१७]पव्वइओ तं धीरं सुविहियमो[१८]द्दायणं वंदे ॥७७॥

१.-३. १७. **पव्वइयं** खं. २ । २. **०भोए** खं. १ । ४. **चउसट्ठि०** खं. २ । ५. **वोसिरइ** खं. २ । ६. **छड्डेउं नरवसहो** खं. २ । ७. **०सन्निहाणं** खं. १ । ८. **०रसगुणट्ठाणेसु** खं. २ । ९. **अत्थिकुच्छीणं** खं. २ । १०. **खासं सासं च जरं** खं. २ । ११. **सो** खं. २ । १२. **सक्केणं भत्तिनिब्भरमणेण** खं. २ । १३. **दिव्वाहि पुप्फविट्ठीहिं** खं. २ । १४. **वरिस०** खं. २ । १५. **ओहट्टे०** खं. २ । १६. **निडालं** खं. २ । १८. **०मुद्दा०** खं. २ ।

गामसह[1]स्साइं मुणी जो [2]चइय अणोवमं तवं कासी ।
सोवीररायव[3]सभं सुविहियमो[4]द्दायणं वंदे ॥७८॥
ससिसगलधवलवेसं चंदाभाए पडिबोहियमईयं ।
इरियावह[5]पडिवन्नं [6]दढधीमोद्दायणं वंदे ॥७९॥
जं पञ्च वि रायाणो उवट्ठिया[7] भत्तिचोइयमईया ।
वंदंति [8]तओभासम्मि पव्वए तं नमंसामि ॥८०॥
जस्स मरणम्मि देवा परिकुविया [9]रोरुए सिलावासं ।
[10]मुंचंति परमघोरं तं [11]जइमोद्दायणं वंदे ॥८१॥
जो सो इसिसंघाणं कन्हो व दसारमंडलचमूणं ।
कासी तवमुक्कट्ठं तं [12]सरि(रिसि)मोद्दायणं वंदे ॥८२॥
असुर सुर पन्नगिंदा जं तं पडिमागयं नमंसंति ।
[13]उज्जेंतसेलसिहरे तं सिरसा सारणं वंदे ॥८३॥
बारस य भिक्खुपडिमा जेणणुचिन्ना महाणुभावेणं ।
वाससयाणि य [14]मोणं अट्ठच्छट्ठाणि जो कासी ॥८४॥
तं खविय[15]पेमदोसं वंदे जरमरणसोगमुत्तिन्नं ।
अउल[16]सुयसागरगयं [17]नेव्वाणमणुत्तरं पत्तं ॥८५॥
[18]सोरियपुरम्मि जायं [19]नंदिकरं रोहिणीए देवीए ।
कुम्मारए सुधीरं निक्खंतं तं नमंसामि ॥८६॥
जेण कयं सामण्णं [20]वाससयम[21]णूणगं [22]जउवरेणं ।
देविंदवंदमहियं बलदेवमिसिं नमंसामि ॥८७॥
सत्त य सत्तमियाओ अट्ठट्ठमियाओ नव य नवमीओ ।
दस [23]दसमियाओ व वसे बलदेवमिसिं नमंसामि ॥८८॥

---

१. **०स्साणि** खं. २ । २. **पयहित्ता** खं. १ । ३. **०वसहं** खं. २ । ४. **०मुद्दा०** खं. २ । ५. **०पडिपुन्नं** खं. १ । ६. **सुविहिय०** खं. १ । ७. **उवागया** खं. १ । ८. **तवो०** खं. २ । ९. **रोरुवे** खं. २ । १०. **मुच्चंति** खं. २ । ११. **रिसिवरमु०** खं. २ । १२. **जइवरमु०** खं. २ । १३. **उज्जित०** खं. २ । १४. **मूणं** खं. १ । १५. **०पेस०** खं. २ । १६. **०सुह०** खं. २ । १७. **निव्वाण०** खं. २ । १८. **रिट्ठपुरम्मि य जायं** खं. २ । १९. **णंदि०** खं. २ । २०. **वरिस०** खं. २ । २१ **०मणूणयं** खं. २ । २२. **जदुवरेण** खं. २ । २३ **दसमियाए** खं. २ ।

[१]सट्ठी मासा [२]सट्ठी पक्खा चत्तारि चाउमासीओ ।
जेणणसिएण[३] [४]खविया बलदेवमिसिं नमंसामि ॥८९॥
जं सीहरूवधारी रक्खइ देवो वणे विहरमाणं[५] ।
[६]पडिणीए [७]सासंतो बलदेवमिसिं नमंसामि ॥९०॥
जस्स तया वणचरओ भिक्खं दाऊण धीरपुरिसस्स ।
सह दियलोगं [८]तु गओ बलदेवमिसिं नमंसामि ॥९१॥
दस सागरोवमाइं जस्स ट्ठिई बंभलोयकप्पम्मि ।
तं आगमेसिभद्दं[९] बलदेवमिसिं नमंसामि ॥९२॥
जो हलहराणुचिन्नं अणुत्तरं वीरियं समासज्ज ।
पव्वइओ[१०] तं धीरं सेलगपुत्तं नमंसामि[११] ॥९३॥
जो य परक्कमइ तवं छिन्नं [१२]लूहं च देहमगणिंतो ।
सिद्धं विहुयरयमलं सेलगपुत्तं सिवं वंदे ॥९४॥
वंदामि सुनंदाए नंदिकरं पुत्तमाइरायस्स[१३] ।
इक्खागरायवसहं बाहुबलिं सुंदरीजेट्ठं ॥९५॥
जेण भरहो य नरवइ जुद्धम्मि पराजिओ भुयबलेणं ।
भरहाहि(इ)रेगविरियं बाहुबलिमिसिं नमंसामि ॥९६॥
सोऊण[१४] य पव्वइयं बाहुबलिं[१५] भाउयं भरहराया ।
निज्झाइ चक्कवट्टी बहुदेवसहस्सपरिवारो ॥९७॥
बाहुबली वि य भरहं दिट्ठीमुट्ठी पराजिणित्ताणं ।
निक्खंतो एस [१६]खवेमि सव्वं कम्मं अहं तवसा ॥९८॥
बाहुबली वि य महरिसी संवच्छरमणसिओ [१७]पडिमाए ।
वल्लिलयाहि[१८] पिणद्धो[१९] अहिकिन्नो वामलूरेहिं ॥९९॥

१.२. **सट्ठिं** खं. २ । ३. **जेण नमियण०** खं. २ । ४. **खंता** सं. २ । ५. **०माणे** खं. २ । ६. **पड०** खं. २ । ७. **तासिंतो** खं. २ । ८. **०लोयं च** खं. २ । ९. **०सुभद्दं** खं. २ । १०. **पव्वइयं** खं. २ । ११. **सिवं वंदे** खं. २ । १२. **लुगं** खं. २ । १३. **०माय०** खं. २ । १४. **सोऊणं प०** सं. २ । १५. **०बली** खं. १ । १६. **खमे** खं. २ । १७. **पणिवयाए** खं. २ । १८. **वेल्ललयाहिं** खं. २ । १९. **वि णिद्धो** खं. २ ।

[१]तणवल्लीहिं लयाहि य वेढिज्जंतो वि जो न[२]वि क्कंपे ।
वोसट्ठचत्तदेहं बाहुबलिमिसिं नमंसामि ॥१००॥
तं जायमव[३]ज्झाए त[४]क्खसिलाविसयसंधिपव्वइयं ।
वंदे बाहुबलिमिसिं ने[५]व्वुयमट्ठावए चेव ॥१०१॥
जो चइऊण विमाणं सयंपभा[६]-अग्गिरायभवणम्मि ।
जाओ जाइविसिट्ठो जच्चतवियकंचणसवन्नो[७] ॥१०२॥
जो कत्तियाय देवीए पसूओ सरवणम्मि उज्जाणे ।
तं अग्गिरायदइयं खंदकुमारं नमंसामि ॥१०३॥
जो छंदिओ महप्पा रज्जे रट्ठे य[८] नाडयविहीहिं ।
[९]नेच्छइ विणीयविणओ खंदकुमारं नमंसामि ॥१०४॥
अणुमाणेऊण सयं अम्मापियरं[१०] व बंधवजणं च ।
[११]पव्वइओ तं धीरं खंदकुमारं नमंसामि ॥१०५॥
मणिकणगरयणचित्तं जस्स पिया पंडरं सयसलागं ।
विहरंतस्स उ च्छत्तं धरावए तं नमंसामि ॥१०६॥
छट्ठेण जेण छट्ठं बहूणि वासाणि भाविओ अप्पा ।
अणुबद्धमणिक्खित्तं खंदकुमारं नमंसामि ॥१०७॥
[१२]पाओणगम्मि नयरे जेण उ अहियासिया उवसग्गा ।
[१३]कित्तिं जसं च पत्तो खंदकुमारं नमंसामि ॥१०८॥
जो खत्तिएण सत्तीए आहओ गोयरं गवेसंतो ।
[१४]रोहीडगम्मि [१५]नगरे खंदकुमारं नमंसामि ॥१०९॥
जेण कयं सादिव्वं रन्नो पिउणो य छत्तधारस्स ।
पियजीवियं च दिन्नं तस्स विसाहस्स पावस्स ॥११०॥

---

१. **तणु०** खं. २ । २. **णिविक्कंपो** खं. २ । ३. **०मओ०** खं. २ । ४. **अट्ठावयपव्वयम्मि पव्व०** खं. १ । ५. **निव्वुय अ०** खं. २ । ६. **सयंपभे** खं. २ । ७. **०सवण्णो** खं. २ । ८. **रट्ठेण नाडग०** खं. २ । ९. **निच्छइ** खं. २ । १०. **०पियरो य** खं. २ । ११. **जो समणो पव्वइओ** खं. २ । १२. **पाओगगम्हि** खं. २ । १३. **कित्ती** खं. १ । १४. **रोहीडय०** खं. २ । १५. **नयरे** खं. २ ।

जेण पिया [1]तारिसंओ अग्गी अग्गिसरिसेण[2] रोसेणं ।
खत्तियवहं करेंतो अणुसट्ठो तं नमंसामि ॥१११॥
वंदे खंदकुमारं अमोहसत्तीए जेण सत्तीए ।
जेण उदिन्ना संता[3] विविहा विसढा उ उवसग्गा ॥११२॥
[4]अणुमाणेउं भगवं रायाणो खत्तिए पुहइपाले ।
जेणागओ पडिगओ खंदकुमारं नमंसामि ॥११३॥
जो संतिस्स अरहओ सोऊण य सासणं जिणवरस्स ।
[5]निक्खंतो तं धीरं [6]विण्हुं वंदामि अणगारं ॥११४॥
[7]सट्ठिं वाससहस्साइं जेण[8] य च्छट्ठेण भाविओ अप्पा ।
संखित्त-विउलतेयं [9]विण्हुं वंदामि अणगारं ॥११५॥
जो [10]साहुसंघकज्जे [11]णगरे हत्थिणपुरे महापउमं ।
रायाणं मंडलियं तिविक्कमं [12]जायइ महप्पा ॥११६॥
[13]विउरुविऊण पाओ [14]निक्खित्तो जेण मेरुसिहरम्मि ।
वाहाहिं य आगासं अप्फुन्नं तं नमंसामि ॥११७॥
वंदामि [15]रायपुत्तं विण्हुं तवतेय[16]रूवसंपन्नं ।
जेण य [17]उद्धविमाणं [18]विहडियं पायसीसेण ॥११८॥
तेलोक्कं [19]संखुभियं विक्कममाणम्मि धीरपुरिसम्मि ।
रुद्धा य जोइसगणा [20]विण्हुं वंदामि अणगारं ॥११९॥
जो [21]यच्छी दायंतो कमसो देविंद-दाण[22]विंदाणं ।
भय[23]मेयबलं जणंतो उवसंतो तं नमंसामि ॥१२०॥
जेण पउमस्स रन्नो वसुहा [24]ससलिलसकाणणवणंता ।
तिहि विक्कमेहि हरिया विण्हू(ण्हुं) वंदामि अणगारं ॥१२१॥

---

१. **तारसिणा** खं. २ । २. **अग्गिसेण** खं. २ । ३. **सत्ता** खं. २ । ४. **०णेउ महप्पा** खं. २ । ५. **पव्वइओ उ महप्पा** खं. २ । ६. **विन्हुं** खं. २ । ७. **सट्ठी** खं. १ । ८. **जस्स च्छ०** खं. २ । ९. **विन्हुं** खं. २ । १०. **संघसाहु०** खं. २ । ११. **णयरे** खं. २ । १२. **मग्गइ** खं. २ । १३. **विगुरु०** खं. २ । १४. **निक्खंतो** खं. १ । १५. **रायउत्तं** खं. २ । १६. **०सत्तसंजुत्तं** खं. २ । १७. **उड्ढ०** खं. २ । १८. **विहोडियं** खं. २ । १९. **संखुहियं** खं. २ । २०. **विन्हुं** खं. २ । २१. **इड्ढि दाएंतो** खं. २ । २२. **वेंदाणं** खं. २ । २३. **०मइबलं** खं । २४. **वसुहास्सनिलस्स का०** खं. २।

एसो तेविक्कमो पायं[१] मेरुस्स मत्थए ठविओ ।
संघस्स रक्खणट्ठा देही[२] रज्जे तिविक्कामो ॥१२२॥
मासं पाओवगओ आलोइय निंदिऊण[३] दुच्चरियं ।
सव्वट्ठसिद्धिनिलयं विण्हू(ण्हुं) वंदामि अणगारं ॥१२३॥
छट्ठं च अणिक्खित्तं आयंबलभोयणा वि भत्तट्ठा ।
छम्मासा जेण कयं तं सिरसा सुव्वयं वंदे ॥१२४॥[४]
धणकगणगरयणपउरो जेण उ संसारवसे[५]हिभीएण ।
मुक्को कुडुंबवासो तं सिरसा सुव्वयं वंदे ॥१२५॥
अहुणोववन्नमेत्तो जो सो ईसाणरायमभिभवइ ।
तेएण य लेसाए तं सिरसा सुव्वयं वंदे ॥१२६॥
जेण कयं सामन्नं छम्मासा जा(झा)णमब्भुवगएणं ।
ईसाणकप्पनिलयं तं सिरसा सुव्वयं वंदे ॥१२७॥[६]
जेण कयं सामन्नं छम्मासा झाणसंजमरएणं ।
[तं]मुणिं[७]मुयारकित्तिं गोभद्दमिसिं[८] नमंसामि ॥१२८॥
जो जोव्वणे[९] उराले भगवंतो बोहिओ कुबेरेणं[१०] ।
तं मुणिं[११]मुयारकित्तिं गोभद्दमिसिं नमंसामि ॥१२९॥
आरंभाउ नियत्तं जं तं धीरो[१२] ठवेइ[१३] धम्मम्मि ।
सव्वज[१४]गहियसुहम्मि सिवमउलगयं सिवं वंदे ॥१३०॥
असमागमे मुणीणं[१५] तु [१६]संभवो जस्स इसि[१७]कुमारस्स ।
केसिं कुमारसमणं [१८]विमाणवरवासियं वंदे ॥१३१॥
जेण प[१९]एसी राया बहूहिं हेऊहिं[२०] जो समणुसट्ठो ।
ओयारियो य [२१]मग्गे केसिं वंदामि अणगारं ॥१३२॥

---

१. **राय** खं. २ । २. **देहे रायं तिविक्कमं** खं. २ । ३. **निंदियाण** खं. २ । ४. **गाथेयं** न खं. १ । ५. **०वास०** खं. २ । ६. **गाथेयं न** खं. १ । ७. **मुणिं उ०** खं. १ । ८. **०मिसी** खं. २ । ९. **जोयणे उयारे** खं. २ । १०. **०रेण** खं. २ । ११. **मुणिकुमार०** खं. २ । १२. **वीरो** खं. २ । १३. **ड्डावेइ** खंय १ । १४. **०जगहियसुहाए** खं. २ । १५. **मुणिवरस्स** खं. २ । १६. **संभमो** खं. २ । १७. **रिसि०** खं. २ । १८. **सुविहियगहियं नमंसामि** खं. २ । १९. **पसेणयराया** खं. २ । २०. **०हिं स०** खं. २ । २१. **मग्गं** खं. २ ।

जेण[१] य सेयवियाए राया[२] अणुसासिओ पडिनिविट्ठो[३] ।
केसिं कुमारसमणं वि[४]माणवरसंठियं वंदे ॥१३३॥

देहापयम्मि नयरे पडिमं ठासीय चेइए रोद्दे ।[५]
तं वज्जलाढपुत्तं अणुत्तरपरक्कमं वंदे ॥१३४॥

पडिमाए [६]प(पा)रियाए जो सो दिन्नो[७] वरम्मि देवेणं ।
धम्मधुरधारगं तं वरदत्तमिसिं नमंसामि ॥१३५॥

[८]आगासमिवाखोभं मेरुमिव अकंपियं ठियं धम्मे ।
थिर[९]थिमियममरमहियं तेयलिपुत्तं नमंसामि ॥१३६॥

जं तं सायमसायं सुहं व दुक्खं व नो विकंपेइ ।
वासीचंदणकप्पं ते[१०]यलिपुत्तं नमंसामि ॥१३७॥

वारत्तपुरे जायं सोहम्म[११]वडिंसगा चइत्ताणं ।
उत्तमकुलसं[१२]भूयं वारत्तमिसिं नमंसामि ॥१३८॥

जो गो[१३]ट्ठीमज्झगओ उज्जाणगओ वि चिंतए धम्मं ।
अवगसियरागदोसं वारत्तमिसिं नमंसामि ॥१३९॥

जो सो(सा)गरो व थिमिओ ने[१४]च्छीय प[१५]भासिउं प[१६]भासेंतो ।
सिद्धं विहुयरयमलं वारत्तमिसिं नमंसामि ॥१४०॥

जस्स कुले परियाओ विज्जा[१७] पवरा तहेव रूवं[१८] च ।
[१९]वारत्तगं मुणिवरं भावियभावं नमंसामि ॥१४१॥

पासस्स अंतिए विहरिऊण वासाइं ति[२०]न्नि तेयस्सी ।
पप्फोडियकलिकलुसं वा[२१]रत्तमिसिं नमंसामि ॥१४२॥

---

१. **जो सो से०** खं. २ । २. **रायाणं संसइं** खं. २। ३. **०निविट्ठं** खं. २ । ४. **वइमइमहियं** खं. १ । ५. **रोद्दे** खं. २ । ६. **पारिएणं** खं. २ । ७. **दिन्ने** खं. २ । ८. **सागरमिव गंभीरं** खं. २ । ९. **थिरममिय०** खं. २। १०. **विरागदोसं** खं. २ । ११. **०वडेंसगा** खं. २ । १२. **०प्पसूयं** खं. २ । १३. **गोट्ठिम०** खं. २ । १४. **निच्छीय** खं. २ । १५. **पहासियं** खं. २ । १६. **पहूसंतो** खं. २। १७. **विज्जावगत०** खं. २ । १८. **रूवमवि** खं. २ । १९. **वारत्तं मुणिवीरं** खं. २ । २०. **तिण्णि** खं. १ । २१. **वारुत्त०** खं. १ ।

जं तं अम्मापियरो भावियभावं मुणिं न याणंति[1] ।
खंतं दंतं [2]गुत्तं कुम्मापुत्तं नमंसामि ॥१४३॥
संघट्टिओ व[3] कुम्मो जो काए इंदियाणि नियमित्ता[4] ।
झाणवरमब्भुवगओ[5] कुम्मापुत्तं नमंसामि ॥१४४॥
जो चारणेहिं पुट्ठेण विदेहे जिणवरेण वागरिओ ।
भरहे कुम्मापुत्तो रायगिहे केवली अत्थि ॥१४५॥
जं तं चारणसमणा विणीयविणया पयाहिणं करिय ।
पुच्छंति पंजलिउडा कुम्मापुत्तं नमंसामि ॥१४६॥
जो मंदिरं विमाणं[6] ति पुच्छिओ चारणेणं[7] आइक्खे ।
वागरमाणमवितहं कुम्मापुत्तं नमंसामि ॥१४७॥
जं तं गोवेसधरं अणुकंपंतो सुरो समणुजाओ[8] ।
गोसूइयपरमत्थं[9] [10]गोसन्नं तं इम वंदे ॥१४८॥
जो सो जल्लमलधरो एक्को[11] विविहगुणभाविओ विहरे ।
तं वेसियायणमिसिं हुयग्गिजालोवमं वंदे ॥१४९॥
गोसालेणं[12] वि खलिओ जो सो आसीविसोवमो रुट्ठो ।
तवतेयं णिसिरिंसु[13] तं वंदे वेसियायणमिसिं[14] ॥१५०॥
जो कारणेण कुविओ पासित्ता नियमसुट्ठियं [15]वीरं ।
पडिसाहरेइ[16] तेयं तं वंदे वेसियायणमिसिं ॥१५१॥
जो कुलले कलहंतो पासित्ता आमिसम्मि संबुद्धो ।
झाणवरमब्भुवगओ[17] तं वंदे निन्नकुलपुत्तं ॥१५२॥
जो चक्कवट्टिभोए अणुत्तरे [18]भाविओ न रंज्झित्था ।
पव्वइओ[19] तं धीरं वंदे हं निन्नकुलपुत्तं ॥१५३॥

---

१. **जाणंति** खं. २ । २. **मुत्तं** खं. २ । ३. **व्व** खं. २ । ४. **०मेत्ता** खं. २ । ५. **०वगयं** खं. २ । ६. **विमाणं पु०** खं. २ । ७. **चारणाणमाइ०** खं. २ । ८. **०पत्तो** खं. २ । ९. **मट्ठं** खं. २ । १०. **गोभद्दमिसिं नमंसामि** खं. २ । ११. **एगो** खं. २ । १२. **०लेणं कलिओ** खं. २ । १३. **णिसिरिसिं** खं. २ । १४. **०यायमिसिं** खं. २ । १५. **धीरं** खं. २ । १६. **०साहरिऊण तवं** खं. २ । १७. **०वगयं** खं. २ । १८. **वयसमाणरज्जस्स** खं. २ । १९. **पव्वइयं** खं. २ ।

जो कुलल[1]अयगस्समन्नियस्स कुललस्स पासिय विलोवं ।
रोए सीलचरित्तं तं वंदे निन्नकुलपुत्तं ॥१५४॥
सययं[2] भवोहमहणस्स [3]जस्स निन्नकुलपुत्तसीहस्स ।
नामग्गहणे[4] वि कए भविया आणंदिया हुंति[5] ॥१५५॥
निन्नकुलपुत्तसीहस्स [6]तस्स निन्नकुलपवरपुरिसस्स ।
पणमामि पययमणसो भावेण विसुद्धभावस्स ॥१५६॥
जस्स चमरो सरीरे देविंदो उभयओ वि रुब्भित्था ।
परिनेव्वुयस्स अरहओ वणसंडे तं नमंसामि ॥१५७॥
सव्विड्ढीय सपरिसो जस्स सरीरमहिमं सुराहिवई ।
काऊण [7]पंजलियडो थुणइ य[8] महुराहिं वग्गूहिं ॥१५८॥
सुंदरदियलोयचुयं सुंदरकुलवंस सुंदरचरित्तं ।
सुंदरगइनिब्भेलण[9] धुयरय सिरसा नमंसामि ॥१५९॥
अवगसियराग अवगसियदोस अवगसियसव्वसंसार[10] !।
अवगसियसव्वबंधण पवरसिव[11]गइंगय ! नमो ते ॥१६०॥
जो [12]गेवेज्जाहि चुओ आयाओ जउकुले विसालम्मि ।
तं देव[13]इंप्पसूयं गयसुकुमालं नमंसामि ॥१६१॥
जं तं अम्मापियरो जिणवरवस[14]भस्स रिट्ठनेमिस्स ।
दासीय सीसभिक्खं गयसुकुमालं नमंसामि ॥१६२॥
सव्वंगसुंदरंगो गयसुकुमालो [15]पिंओ [16]बहुंजणस्स ।
जो समणो पव्वइओ चइऊण धणं अपरिमेज्जं ॥१६३॥
हलहर-चक्कहरकणिट्ठएण तह लट्ठएण होऊणं[17] ।
समणत्तणमणु[18]चिन्नं गयसुकुमालेण धीरेण ॥१६४॥
पुरिसच्छेरयभूयं गयसुकुमालस्स जोव्वणं आसि ।

---

१. **कुललपहगरसम०** खं. २ । २. **सयय भटवाहम०** खं. २ । ३. **तस्स** खं. २ । ४. **०णम्मि कए** खं. २ । ५. **होंति** खं. २ । ६. **नास्ति** खं. २ । ७. **अंजलिउडो** खं. २ । ८. **सुमहुरा०** खं. २ । ९. **०लय०** खं. २ । १०. **संसारं** खं. २ । ११. **गइं गय** खं. २ । १२. **गेवि०** खं. २ । १३. **देवईप०** खं. २ । १४. **०वसहस्स** खं. २ । १५. **पि** खं. १ । १६. **पहु०** खं. २ । १७. **होऊण** खं. २ । १८. **०चिण्णं** खं. २ ।

जं सुणिय चंदलेहा उम्मत्ता रायवरकन्ना ॥१६५॥
गयहत्थसंट्ठियंभुयस्स[१] तस्स गयवरसुविक्कमगइस्स ।
गयमयगंधस्स[२] नमो गयसुकुमालस्स धीरस्स ॥१६६॥
जेणज्जियं विसालं[३] नाणमणंतं च[४] दंसणचरित्तं ।
भोगा य भावचत्ता गयसुकुमालं[५] नमंसामि ॥१६७॥
जो सो सुसाणमज्झे पडिमं [६]ठासीय चेइए रोद्दे ।
वोसट्ठचत्तदेहं गयसुकुमालं नमंसामि ॥१६८॥
तं दुरणुचरचरित्तं वंदे पवरगुणमणुचरं[७] धीरं ।
संसारवसहिमुक्कं गयसुकुमालं गुणसमिद्धं ॥१६९॥
जो चोद्दसपुव्वधरो धम्मावाएण अपरिविडिएणं[८] ।
जाओ कुले विसाले चइउं सव्वट्ठसिद्धाओ ॥१७०॥
तं चोद्दसपुव्वधरं वंदे देवगणवंदियं सिरसा ।
गुणसयसहस्स[९]महियं पज्जुन्नमिसिं नमंसामि ॥१७१॥
पुरवरकवाडवच्छं सव्वक्खरसन्निवायविहिकुसलं ।
वरवइरवलियमज्झं पज्जुन्नमिसिं नमंसामि ॥१७२॥
वेमाणिओ [१०]व्व देवो जो सो विज्जाहिं कीलइ महप्पा[११] ।
विज्जाचरणगुणड्ढं पज्जुन्नमिसिं नमंसामि ॥१७३॥
गगणंतल[१२]गमणदच्छं विज्जाहररायमाणनिम्महणं ।
सिरिवच्छंकियवच्छं जउकुलतिलयं नमंसामि ॥१७४॥
पवरजयरायमाणो भग्गो जेणं[१३] उ दसारसीहेणं ।
विज्जाहररायदमिया पज्जुन्नमिसिं नमंसामि ॥१७५॥
मणिकणगरयणचित्तेण [१४]आगओ जोइणा विमाणेणं ।
वासंतो कुसुमोहं अरिट्ठनेमीजिणसगासं[१५] ॥१७६॥
[१६]जो वंदिऊण सिरसा अरिट्ठनेमिं[१७] दसारवरसीहं[१८] ।

---

१. ०**संट्ठियस्स तस्स** खं. १ । २. ०**गंधिस्स** खं. २ । ३. **चरित्तं** खं. २ । ४. **दसारसीहेण** खं. २ । ५. ०**मालेण धीरेण** खं. २ । ६. **गसीय** खं. २ । ७. **पवरमणु**० खं. २ । ८. ०**वाडीए** खं. २ । ९. **कलियं** खं. २ । १०. **य** खं. १ । ११. **गयाण** खं. २ । १२. **गयणयल**० खं. २ । १३. **जेणं** द० खं. २ । १४. **जो सया आगओ वि**० खं. २ । १५. ०**सगासे** खं. २ । १६. **जं** खं. १ । १७. ०**नेमी** खं. १ । १८. ०**सीहो** खं. १ ।

पव्वइओ[1] तं धीरं पज्जुन्नमिसिं नमंसामि ॥१७७॥
संवरकुलस्स महणं कुसमयमहणं कसायनिम्महणं ।
सिद्धं विहुयरयमलं पज्जुन्नमिसिं नमंसामि ॥१७८॥
बारवईकायलयं पुत्तं कन्हस्स वासुदेवस्स ।
जंबवईपियपुत्तं संबकुमारं नमंसामि ॥१७९॥
[2]सहिरन्नियाय दइयं जुगबाहुं जुद्धदूमइ[3] सूरं (?)।
वंदे दसारसीहं पुत्तं सिरिवच्छधारिस्स ॥१८०॥
बारवईकायलयस्स[4] तस्स[5] अब्भहियपेच्छणिज्जस्स[6] ।
अज्जवि सुव्वंति जए संबकुमारस्स ललियाइं[7] ॥१८१॥
उवहारे उवणीए जो तइया तिणसाएण[8] कुद्धेणं[9](?) ।
ठाणाओ वि न चइओ[10] चालेउं तं नमंसामि ॥१८२॥
जो सो पाओवगओ तत्तकवल्लोवमे[11] सिलावट्टे ।
सोहग्गं[12] रूवं जोव्वणं[13] च ललियं[14] व चइऊण ॥१८३॥
धाराहओ विव[15] गिरी [16]पस्संदइ सव्वओ गलंतेहिं ।
[17]फोडेहिं धीरपुरिसो न य खुब्भइ निच्छओवगओ[18] ॥१८४॥
मोत्तूण बंधवजणं भोगसमिद्धिं[19] च विसयसोक्खं च ।
वेरग्गं संपत्तो संबकुमारं नमंसामि ॥१८५॥
उत्तमज्झाणोवगओ सव्वे वि परीसहे मलेऊणं ।
जो सिद्धिं संपत्तो संबकुमारं नमंसामि ॥१८६॥
जं तंतियं वरत्तं पाओवगयं[20] तु खायइ सियाली ।
मोगल्लसेलसिहरे कालासियवेसियं वंदे ॥१८७॥
जो न चलिओ महप्पा मणेण वायाए कायजोगेणं ।
तं वोसट्ठसरीरं कालासियवेसियं वंदे ॥१८८॥

---

१. **पव्वइयं** खं. २ । २. **सुहि०** खं. २ । ३. **जुद्धम्मई** खं. १ । ४. **०लगस्स** खं. २ । ५. न खं. २ । ६. **०हियं चेव पे०** खं. २ । ७. **चरियाइं** खं. १ । ८. **तिणिसएण** खं. २ । ९. **सुद्धेणं** खं. १ । १०. **चलिओ** खं. २ । ११. **रमे** खं. २ । १२. **सोक्खं** खं २ । १३. **जोव्वणगव्वं** खं. २ । १४. **लीलं च च०** खं. २ । १५. **वव** खं. २ । १६. **पासंदइ** खं. २ । १७. **होडेहिं** खं. २ । १८. **०व्व गओ** खं. २ । १९. **०समिद्धं** खं. २ । २०. **०वगमं** खं.२ ।

अन्नाय एव देहे नियय[1]सरीरम्मि खज्जमाणम्मि ।
धीरपुरिसस्स [2]आसी अविवन्नो [3]जस्स मुहवन्नो ॥१८९॥

धम्मे दढसन्ना[4]हो जो निच्चं मंदरो इव[5] अकंपो ।
इहलोयनिप्पिवासो परलोयगवेसओ धीरो[6] ॥१९०॥

[7]जो सोमेण जमेण य वेसमणेण वरुणेण य महप्पा ।
मोगल्लसेलसिहरे नमंसिओ तं नमंसामि ॥१९१॥

सोरिय विमाण[8]वासं माणुस्सं पिय [9]दुगंछियं जम्मं ।
जो समणो पव्वइओ हरिएसमिसिं नमंसामि ॥१९२॥

सुहुयमिव जायतेयं म[10]हब्बलं विविहनियमचिंचइयं ।
[11]सोयागपुत्तमणहं हरिएसमिसिं नमंसामि ॥१९३॥

जो दिस्स किण्हसप्पं घोरविसं निव्विसं व पडिबुद्धो ।
पढमवए पव्वइ[12]ओ हरिएसमिसिं नमंसामि ॥१९४॥

जो कोसलरायसुयं उदग्गजोव्वणगुणे[13] न इच्छीयं ।
देवाणुभावलद्धं हरिएसमिसिं नमंसामि ॥१९५॥

जो गंतुं[14] तिंदुवणे जक्खसहस्समहिओ दढधिईओ[15] ।
संक्खित्तविउलतेयं हरिएसमिसिं नमंसामि ॥१९६॥

चइऊण जो महप्पा भज्जा सिंगारचारुवेसाओ ।
पढमवए पव्वइओ सुकोसलमिसिं नमंसामि ॥१९७॥

छट्ठेण जेण[16] छट्ठं जोगो जावज्जीवं अहेसीय ।
तुं सुविहियं मुणिवरं सुकोसलमिसिं नमंसामि ॥१९८॥

रम्मम्मि चित्तकूडे जेण [17]उ आयावियं मुणिवरेणं ।
अभिभूय सूरलेसं सुकोसलमिसिं नमंसामि ॥१९९॥

---

१. **नियगसरीरेवि** खं. २ । २. **तहवि य** खं. २ । ३. **चेव** खं. २ । ४. **०सन्नाओ** खं. २ । ५. **विव** खं. २ । ६. **साहू** खं. २ । ७. **सोहम्मेण जम्मेण** खं. २ । ८. **०वासी** खं. २ । ९. **दुगुं०** खं. २ । १०. **महप्पलं** खं. २ । ११. **सेयाग०** खं. २ । १२. **पव्वइयं** खं. २ । १३. **०गुणेहिं निच्छीयं** खं. २ । १४. **गंतु तिंदुग०** खं. २ । १५. **धीईओ** खं. २ । १६. **जस्स** खं. २ । १७. **जेणं आ०** खं. २ ।

जं तं भवंतरगया[१] मारेसी अप्पणि[२]ज्जिया माया ।
अन्नेसिं पुत्ताणं कएण वग्घी [३]अयाणंती ॥२००॥
माऊए पुत्तमंसं खइयं भाऊहिं भाउणो मंसं ।
संसारम्मि अणंते हा ! जह अन्ना[४]णदोसेण ॥२०१॥
ससिसगलधवललेसं पसत्थवरना[५]णदंसणचरितं ।
सव्वट्ठसिद्धिनिलयं सुकोसलमिसिं नमंसामि ॥२०२॥
जस्स कुलेण बलेण य विण्णाणेण विणएण रूवेणं ।
बीओ नत्थि सरिसओ सजणवयाए विसालाए ॥२०३॥
बत्तीसं भत्तसयं उव[६]वासे जो [७]अपाणयं कासी ।
उज्जाणगं नियंतं तं सिरसा लंचगं वंदे ॥२०४॥
अज्जवि य विसालाए तस्स मुणिंदस्स नामधेएणं ।
लंचगसिवो[८]वगासो जत्थ महरिसी ट्ठिओ [९]पडिमं ॥२०५॥
अभिभूय उवसग्गे जो पडिमं एगराइयं [१०]कासी ।
तं लंचगं मुणिवरं अमरनरनमंसियं वंदे ॥२०६॥
जो सो सुसाणमज्झे पडिमं ट्ठासीय चेइए रोद्दे ।
वोसट्ठचत्तदेहं तं सिरसा लंचगं वंदे ॥२०७॥
देवड्ढिईअणुभागं जो जाणइ फासियाए पडिमाए ।
तं लंचगं मुणिवरं अमरनरनमंसियं वंदे ॥२०८॥
गु[११]णधरगुणजसमालं वितिमिरनाणे[१२]क्ककुंडलं अजियं ।
लंचगमहमणगारं अमरनरनमंसियं वंदे ॥२०९॥
चइऊण बंभलोगा रायगिहे पुरवरे समुप्पन्नं ।
तेयबलसत्तजुत्तं मेय[१३]ज्जरि[१४]सिं नमंसामि ॥२१०॥
जो सो [१५]धम्ममुयारं सद्दहिऊण तिविहेण निक्खंतो ।
कासी तवमुक्कट्ठं मेयज्जमि[१६]सिं नमंसामि ॥२११॥

---

१. ०**गयं** खं. २ । २. **अप्पणे०** खं. २ । ३. **य जा०** खं. २ । ४. **अप्पाण** खं. २ । ५. ०**झाण संजमच०** खं. २ । ६. **उववासं** खं. २ । ७. **य पाणगं** खं २। ८. ०**सिंगपगासो** खं. २ । ९. **ठाणे** खं. २ । १०. **ठाइ** खं. २ । ११. **गुणजसधरवणमालं** खं. २ । १२. ०**नाणेण कुं०** खं. २ । १३. **मियज्ज०** खं. १ । १४. ०**मिसिं** खं. २ । १५. **जो धम्ममिणमु०** खं. २ । १६. ०**रिसिं** खं. १ ।

रायगिहम्मि पुरवरे समुयाणट्ठा कयाइ हिंडंतो ।
पत्तो य तस्स भवणं सुवन्नकारस्स पावस्स ॥२१२॥
जो कुंचगावराहे पाणिदया कुंचगं तु नाइक्खे ।
जीवियमणुपेहंतं मेयज्जमिसिं नमंसामि ॥२१३॥
निप्फोडियाणि[१] दोन्नि वि सीसावेढेण जस्स अच्छीणि ।
न य संजमाओ[२] चलिओ मेयज्जो[३] मंदरगिरि व्व ॥२१४॥
तम्मि य बहुउवसग्गे[४] सम्मं अहियासियं[५] मुणिवरेण ।
अह उपन्नमणंतं नाणवरं उत्तमं तस्स ॥२१५॥
निप्फिडिऊण[६] पुरवरा पाओवगओ तओ पुरिससीहो ।
आहारं च सरीरं कम्मं सेसं च धुणिऊण ॥२१६॥
उम्मुक्को जो भगवं जम्मणमरणपरियट्टणस(भ)याणं ।
भवसयसहस्समहणं मेयज्जमिसिं नमंसामि ॥२१७॥
संखदलविमलधवलं[७] जो पवरं सिद्धिपट्टणं[८] पत्तो ।
सिद्धं विहुयरयमलं मेयज्जमिसिं नमंसामि ॥२१८॥
जेण य गब्भगएणं माऊए डोहलं जणंतेणं ।
सव्वेसिं जीवाणं नव मासे दाइओ अभओ ॥२१९॥[९]
जीवाण अभयदाणेण जस्स अभओ त्ति ठावियं नामं ।
तं पुरिसपुंडरीयं पयाणुसारी(रिं) नमंसामि ॥२२०॥
जो पवरवद्धमाणस्स सासणे अणुचरे तवमुयारं ।
सेणियकुलकायलयं अभयं वंदामि अणगारं ॥२२१॥
तं दुरणुचरचरित्तं वंदे पवरगुणसत्तसंजुत्तं ।
अभयं विणयनयनिहिं अमरनरनमंसियं निच्चं ॥२२२॥
जो पव्वइओ संतो कासी अणियट्टितं तवोकम्मं ।
सव्वट्ठसिद्धिनिलयं अभयं वंदामि अणगारं ॥२२३॥
जस्स घरम्मि अइगया असि-तोमर-मंडलग्ग-धणुहत्था ।
खुद्दा निवा(रा)णुकंपा चोरा ओसोवणिं करिया ॥२२४॥

---

१. **निप्फेडि०** खं. २ । २. **धम्माओ** खं. २ । ३. **मेयज्जमिसिं नमंसामि** खं. २ । ४. **०सग्गं** खं. २ । ५. **०सिए** खं. २ । ६. **निक्खिमिऊण** खं. २ । ७. **०सरिसं** खं. २ । ८. **पञ्चमं गइं पत्तो** खं. २ । ९. २१९-२२८ पर्यन्तं खं. १ प्रतौ नोपलब्धं, पत्रमेकं नास्ति ।

जस्स य कणगव(ध?)णं पि य दिप्पयमणिहारभूसियंगीहिं ।
महिलाहि भवणरयणं जंबुं वंदामि अणगारं ॥२२५॥
हारद्धहारभूसण-मणिमुत्तसिलप्पवालवइराइं ।
भरियाइं सिरिघराइं तस्स पुरिसपुंडरीयस्स ॥२२६॥
जो मायावित्तेहिं अट्ठहिं कन्नाहिं नं निवेसंति ।
एगदिवसेण भगवं ताउ चइऊण पव्वइओ ॥२२७॥
जस्स य अभिनिक्खमणे चोरा संवेगमागया खिप्पं ।
तेण सहा(ह) पव्वईया जंबुं वंदामि अणगारं ॥२२८॥
सीहत्ता निक्खंतो सीहत्ता चेव विहरई भयवं ।
जंबू पवरगुणधरो वरनाणचरित्तसंपन्नो[1] ॥२२९॥
नरयगइगमण जम्मणमरण[2] पुणब्भवण सागरोप्पाओ ।
जंबू भवोहमहणो तिन्नो संसारकंतारं ॥२३०॥
चरिमसरीरधराणं चरिमं चरणगुणपारगं सिरसा ।
वंदामि जंबुनामं पवरसिवसुहगइं पत्तं ॥२३१॥
[3]रिद्धित्थिमियसमिद्धाए जो तइया पुरवरीए रम्माए ।
बारवईए महप्पा अणुचरइ तवं परमघोरं ॥२३२॥
कन्हेण वासुदेवेण पुच्छिओ जो जिणेण वागरिओ ।
घोरतवस्सी तइया ढंढं वंदामि अणगारं ॥२३३॥
नवि उस्सुओ न दीणो न दुम्मणो न [4]वहिओ न य [5]विसन्नो ।
ढंढो अलाभपरीसहेण भगवं दढधिईओ ॥२३४॥
खण्डतखमं जियलोभं वंदे तवतेयरूवसपन्नं[6] ।
विउलतवयेयरासिं ढंढं वंदामि अणगारं ॥२३५॥
कन्हेण वासुदेवेण जो तइया रायमग्गमोइन्नो[7] ।
अभिवंदिओ निसुढिएण वंदे हं[8] ढंढमणगारं ॥२३६॥
सत्त य धणकोडीओ वरवइरमए य हत्थिणो सत्त ।
जो विहुणिय पव्वइओ तं वंदे गंगदत्तमिसिं ॥२३७॥

---

१. ०**संपन्नं** खं. १ । २. **मरणब्भव चेव सा०** खं. २ । ३. **रिद्धि त्थमिय०** खं. २ । ४. **विहिओ** खं. १ । ५. **निसन्नो** खं. १ । ६. ०**संपण्णं** खं. २ । ७. ०**मोइन्ना** खं. १ । ८. **तं वंदे ढंढ०** खं. २ ।

वरवेरुलिए य मणी-मुत्ताओ कंचणं पवालं च ।
जो विहुणिय पव्वइओ तं वंदे गंगदत्तमिसिं ॥२३८॥
सीयाओ संदणाणि य रहा य गड्डी य जाण-जुगा(ग्गा)इं ।
जो विहुणिय पव्वइओ तं वंदे गंगदत्तमिसिं ॥२३९॥
तवविणयसमियगुत्तं वंदे पवरगुणमणुचरं सिरसा ।
दढसमयमरहियमइं नमंसिओ गंगदत्तमिसिं ॥२४०॥[1]
जो चइऊण सरीरं आयाओ सुरवरो महासुक्के ।
तं आगमेसिभद्दं नमंसिमो[2] गंगदत्तमिसिं ॥२४१॥
पुव्वभवनेहबद्धो जस्स पिया देइ नागकन्नाओ ।
सव्वंगसुंदरीओ ताओ चइऊण पव्वइओ ॥२४२॥
थणभर[3]नमियंगीओ ताओ पडिपुन्नचंदवयणाओ ।
सो पवरनागदत्तो भुंजइ वरनागकन्नाओ ॥२४३॥
ताहि समं वरपुरिसो विलसित्ता कइवयाइं वासाइं ।
जिणवयणसुइसक[4]न्नो इच्छइ समणत्तणं काउं ॥२४४॥
नेऊरपागडाओ ताओ वरकडगमंडियभुयाओ ।
चइऊण भोगविरओ जिणवयणमणुत्तरं कासी ॥२४५॥
भगवं पि नागदत्तो उदारतवसंजमं अणुचरित्ता ।
चइऊण तं सरीरं देवो वेमाणिओ जाओ ॥२४६॥
जो तिहि पएहिं धम्मं समणेण समाहिणा समणुसट्ठो ।
अभिरोइयसामण्णं चिलायपुत्तं नमंसामि ॥२४७॥
उवसम-विवेय-संवर आसज्ज समाहिणा समणुसट्ठो ।
तं पवरधिइयविजयं चिलायपुत्तं नमंसामि ॥२४८॥
काएहिं जस्स निक्कड्ढियाणि नयणाणि चत्तदेहस्स ।
खज्जंताइं पि न [5]निवारियाइं तमहं नमंसामि ॥२४९॥
पाए हुस(स्स)रियाओ सोणियधाराहिं नयणमुक्काहिं ।
मेरुव्व ठिओ अचलो चिलाइपुत्तं नमंसामि ॥२५०॥

---

१. २३८-३९-४० गाथात्रयं खं. १ नास्ति । २. **०सिओ** खं. २ । ३. **थणहर०** खं. १ ।
४. **०सयन्नो** खं. २ । ५. **न वारि०** खं. २ ।

पाएहिं[1] ओसरियाओ सोणियगंधेण जस्स कीडीओ ।
खायंति [2]उत्तिमंगं चिलायपुत्तं नमंसामि ॥२५१॥
[3]कसाइपाउओविव ससीसओ समुहओ [4]सवाहाओ ।
कीडाहि धीरपुरिसो[5] न खोभि[6]ओ निच्छओवगओ ॥२५२॥
चालणगं पिव भगवं समंतओ सो कओ य[6] कीडाहिं ।
घोरं सरीरवियणं तहा[7]वि अहियासए धीरो ॥२५३॥
सोमो य पढमराया जमो य वरुणो य[8] तह कुबेरो य ।
सव्वे वि लोगपाला निमंतए[9] जं परमतुट्ठो(?ट्ठा) ॥२५४॥
अड्ढाइज्जेहिं राइंदिएहिं पत्तं चिलायपुत्तेण ।
देविंदामरभवणं पाओवगमं [10]करिंतेण ॥२५५॥
जो सो सुसाणमज्झे पडिमं ठासीय चेइए रोद्दे ।
वोसट्ठचत्तदेहं कुरुदत्तमिसिं नमंसामि ॥२५६॥
जो दज्झ[11]माणओ विय तइया अग्गीय तत्थ जालाहिं ।
न य कासी य पओसं कुरुदत्तमिसिं नमंसामि ॥२५७॥
हत्थिणपुरकायलयं धीरं सव्वसुयसारपारगयं ।
कुरुदत्तं अणगारं अणुत्तरप[12]रक्कमं वंदे ॥२५८॥
तं चोद्दसपुव्वधरं वंदे देवगणवंदियं सिरसा ।
सव्वट्ठसिद्धिनिलयं कुरुदत्तमिसिं नमंसामि ॥२५९॥
जो[13] चोइओ महप्पा देवेणं पुव्वसंगईएणं ।
पव्वइओ[14] तं धीरं आणंदमिसिं नमंसामि ॥२६०॥
कुंभग्गसो सुवण्णं मणिमोत्तिसिलप्पवालवइराइं ।
जो चइउं पव्वइओ आणंदमिसिं नमंसामि ॥२६१॥
जस्स य अ[स]द्दहन्ती भोगवि[15]हिं चेल्लणा गया भवणं ।

१. **पाए दुस्सरि०** खं. २ । २. **मत्थुलिंगं** खं. २ । ३. **कासाइपाववो०** खं. २ । ४. **सवाहूओ०** खं. १ । ५. **०पुरिसे** ख. २ ॥ ६. **खोहिओ** खं. २ । ७. **उ** खं. । ८. **तह विय** खं. २ । ८. **०णो तहा** खं. २ । ९. **निमंतओ** खं. २ । १०. **करें०** खं. २ । ११. **०माणो** खं. २ । १२. **०परि०** २ । १३. **जो चइउं पव्वइओ** खं. १ । १४. **पव्वइयं** खं. २ । १५. **०विही** खं. २ ।

सह सेणिएण रन्ना आणंदमिसिं नमंसामि ॥२६२॥
रूवगुणसालिणीओ जस्स य लायन्न[1]जोव्वण[2]वईओ ।
भज्जा अणुपव्वइया आणंदमिसिं नमंसामि ॥२६३॥
अभिभूय सूरलेसं उड्डभुओ जो तवं[3] अणुचरित्ता ।
सव्वट्ठसिद्धिनिलयं आणंदमिसिं नमंसामि ॥२६४॥
आगासगमा[4] विज्जा जेणुद्धरिया महाणुभावेणं ।
वंदामि अज्जवइरं अपच्छिमो जो सुत्त[5](त)धराणं ॥२६५॥
माहेसरीओ[6] सेसापुरियं नीया हुयासण[7]गिहाओ ।
गगण[8]तलमइवइत्ता वइरेण महाणुभावेण ॥२६६॥
जो गुज्झगेहि बालो निमंतिओ भोयणेण वासंते ।
णेच्छइ विणीयविणओ तमज्जवइरं नमंसामि ॥२६७॥[9]
जो कन्नाए धणेण य निमंतिओ जोव्वणम्मि गहवइणा ।
नि(ने)च्छय(इ) विणीयविणओ तं वइररिसिं नमंसामि ॥२६८॥
नाणाविणयपहाणं सत्तरससएहिं जो सुविहियाणं ।
पाओवगओ महप्पा तमज्जवइरं नमंसामि ॥२६९॥
दसपुव्वधरं धीरं वंदे पवरबलविरियसंपन्नं ।
सव्वट्ठसिद्धिनिलयं तमहं वइरं नमंसामि ॥२७०॥
एव(वं)मयमयणदोसरहिया मए सुरसहस्समहिया ।
रिसओ परिसाए दिन्तु बोहिं मज्झ य सिद्धिवसहिं उववििहंतु(?) ॥२७१॥

रिषिमण्डलस्तवः समाप्तः ॥

---

१. **लावन्न०** खं. २ । २. **०मईओ** खं. २ । ३. **तवो** खं. २ । ४. **०गाम** खं. २ । ५. **सुयहराणं** खं. १ । ६. **०स्सरीओ** खं. २ । ७. **हुआ०** खं. २ । ८. **गयणयल०** खं. २ । ९. २६७ तः पाठः खं. १ न; पत्राभावात् ।